शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

महादेवी के रेखाचित्रों में समाज-चित्रण

- डॉ. गीता कपिल

एसो० प्रोफे०, हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान-304022

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

महादेवी के रेखाचित्रों में समाज-चित्रण

- डॉ. गीता कपिल

साहित्य एक तरफ आत्माभिव्यक्ति का साधन है तो दूसरी ओर अपने सामाजिक सरोकारों के लिए चिह्नित होता है। हिन्दी का छायावादी साहित्य आत्माभिव्यक्ति का आख्यान रहा तो दूसरी ओर सामाजिक उन्नयन के उत्तरदायित्व का निर्वाह किया। प्रस्तुत शोध आलेख छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों का सामाजिक चित्रण की दृष्टि से समीक्षा प्रस्तुत करता है।

विषय संकेतः- *रेखाचित्र, महादेवी वर्मा, साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन*

आधुनिक युग की मीरा, वेदना व पीड़ा की कवयित्री, रहस्यवादी कवयित्री आदि अनेक अभिधाओं से जानी जाने वाली छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा का काव्य क्षेत्र में अन्यतम स्थान है। उनका काव्य जितना महत्त्वपूर्ण व प्रशंसित है उतना उनका गद्य नहीं, जबकि गद्य साहित्य में उनके सामाजिक सरोकार अधिक व्यापक व समाज से प्रत्यक्ष जुड़े हुए हैं। सन् 1930 के आसपास हमारे राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के साथ किसान, मजदूर व स्त्री आदि के हितों से सम्बन्धित मुद्दे जुड़े और इनके लिए हुए जन-संघर्षों से साहित्य सर्वाधिक प्रभावित हुआ, उसमें यथार्थवादी प्रवृत्ति के बढ़ावा मिला। इस दृष्टि से महादेवी वर्मा के रेखाचित्र विशेष विशेष महत्त्व रखते हैं। ''रेखाचित्रों में उनकी अनुभूति मात्र प्रणयिनी की अनुभूति नहीं। उनमें मातृत्व की ममता, बहन का स्नेह और नारीत्व की विविध अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। उनमें जन-जीवन में व्याप्त दु:ख, दैन्य, अशिक्षा, उत्पीड़न आदि के प्रति विराट् सहानुभूतिपूर्ण करुणा और ममता है, कहीं-कहीं विद्रोह भी है, किन्तु वह ममता और करुणा से अभिभूत हैं, किन्तु महादेवी की कला में यदि कहीं जन-जीवन और समाज का प्रतिबिम्बत मिलता है तो इन रेखाचित्रों में ही, इसलिए महादेवी के साहित्य में इनका विशिष्ट स्थान है।''[1] इन में वे समाज के दीन-हीन, शोषित-दलित, आँसू व पीड़ा से बेकल समाज के प्रति केवल सहानुभूति व करुणा प्रदर्शित करके पीड़ा को दूरकर सके।

'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ' और 'पथ के साथी' उनके प्रमुख संस्मराणात्मक रेखाचित्रों के संग्रह हैं। ये नितान्त व्यक्तिगत होते हुए भी सामाजिक विद्रूपताओं और अमानवीय स्थितियों पर लेखिका की पैनी दृष्टि के परिचायक हैं। 'अतीत के चलचित्र' के विषय में सूर्यप्रसाद दीक्षित का कथन है कि, ''इन चलचित्रों में समाज के सर्वहारा वर्ग की झांकी है, उनके दु:ख दैन्य की कहानी है, कुजड़ा, काछी, कुम्हार आदि पात्रों के कदर्थित जीवन की गाथा है, भागिन, वैश्या, विधवा और विकलांग नारियों की जीवन की विडम्बना का स्वर है, पतित जारज वर्ण संकर, तथाकथित नीच नराधम सन्तानों का लेखा-जोखा है और 'दरिद्रनारायण' की कथा हैं''[2] वस्तुत: इन रेखाचित्रें में महादेवी ने निम्नांकित सामाजिक विसंगतियों को उजागर किया है-

वैश्वीकरण के इस जमाने में हम भौतिक प्रगति में काफी आगे निकल गए हैं। शिक्षा ने हमारे समय और समाज को बदला है, परन्तु हमारी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में कोई खास परिवर्तन नहीं दिखता। हमारे समाज में नारी के प्रति हिंसा और अमानवीयता अभी भी जारी है। महादेवी के रेखाचित्रें में नारी जीवन की विडम्बनापरक स्थितियों को उजागर ही नहीं किया गया है अपितु नारी को यातनाएँ देने वाले समाज की बखिया भी उधेड़ी गई है। बाल विवाह भारतीय समाज की एक ऐसी परम्परा है, जिससे भारतीय स्त्रियों की दशा अत्यधिक दयनीय व दुर्बल हुई। यद्यपि शिक्षा के कारण आज विवाह की आयु में बदलाव आया है तथापि कहीं-कहीं अभी भी बाल-विवाह प्रचलित है। 'भक्तिन' नामक रेखाचित्र में भारतीय समाज की इसी प्रथा पर व्यंग्य करती हुई महादेवी लिखती हैं ''पांच वर्ष की वय में उसे हंडिया ग्राम के एक सम्पन्न गोपालक की

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

महादेवी के रेखाचित्रों में समाज-चित्रण

- डॉ. गीता कपिल

एसो० प्रोफे०, हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान-304022

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सबसे छोटी पुत्रवधू बनाकर पिता ने शास्त्र से दो पग आगे रहने की ख्याति कमाई और नौ वर्षीया युवती का गौना देकर विमाता ने बिना माँगे पराया धन लौटाने वाले महारानी का पुण्य लूटा।''[3]

हमारे समाज में पुरुष के लिए विधान है कि वह स्त्री के परलोकवासी होते ही दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी, कितने भी विवाह कर सकता है, परन्तु एक पति के न रहने पर स्त्री के लिए सुख व सम्मान के सारे दरवाजे सदैव के लिए बन्द हो जाते हैं और वह घर-भर की दासी बनने को विवश हो जाती है। मारवाड़ी की किशोरी विधवा बहू के माध्यम से महोदेवी ने भारतीय समाज में विधवाओं की स्थिति का मार्मिक अंकन इस प्रकार किया है, ''उस समाधि जैसे घर में लोहे के प्राचीर से घिरे फूल के समान वह किशोरी बालिका बिना किसी संगी साथी, बिना किसी प्रकार के आमोद-प्रमोद के मानों निरन्तर वृद्ध होने की साधना में लीन थी।''[4] विधवा नारी का परिवार की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता न कोई प्रतिष्ठा होती है। बिट्टों ऐसी स्थिति की भोक्ता है। उसके वृद्ध पति को मृत्यु के नजदीक जानकर उनके ''दोनों पुत्रों ने आकर मकान रुपया आदि अपनी धरोहर सँभालने का पुण्य अनुष्ठान आरम्भ कर दिया। सुपत्रों को यह तीसरी विमाता फूटी आँख नहीं सुहाती, अत: बेचारी बिट्टों का भविष्य पहले से अधिक अन्धकारमय है।''[5] सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर युग में भी आज भी यही मत मान्य है कि पुत्री पराया धन होती है तथा पुत्र ही पिता को स्वर्ग की सीढ़ी प्रदान करता है। यह मानसिकता पुत्र-पुत्री में भेद का सबसे बड़ा कारण है, इसलिए कन्या की कोख में ही निर्मम हत्या कर दी जाती है तथा पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए गंडे-ताबीज, मन्दिर-मस्जिद न जाने कहाँ-कहाँ मन्नतें माँगी जाती हैं। इतना ही नहीं पुत्र की जन्मदात्री माता सर्वत्र सम्मानीय होती है जबकि पुत्री की माता को उपेक्षा का सामना करना पड़ता है, 'भक्तिन' नामक रेखाचित्र में महादेवी ने भारतीय समाज की इस मानसिकता पर तीखा व्यंग्य किया है, ''जब उसने गेहुएँ रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो और संस्करण कर डाले तब सास और जेठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा की। ..... छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दण्ड मिलना आवश्यक था।''[6]

हमारी सामाजिक व्यवस्था वेश्या को ही घृणा से नहीं देखती वरन् जब कभी जाने-अनजाने वह मातृत्व धारण करती है तो उसकी सन्तान भी समाज की घृणा व तिरस्कार को झेलती है। 'अभागी बहू' रेखाचित्र की बहू के तिरस्कार का मुख्य कारण यही है। महादेवी समाज की इस हृदयहीनता पर चोट करती हैं, ''समाज इन्हें न जाने कितने दीर्घकाल से, कितने ही उपायों के द्वारा समझाता आ रहा है कि यह माता, पुत्री, पत्नी आदि 'त्रिगुणात्मक' उपाधियों से रहित जीवन मुक्त नारी मात्र है।''[7]

इस प्रकार इन रेखाचित्रों में महादेवी देवी ने अनेकों असहाय स्त्रियों की गाथाओं को अभिव्यक्ति दी है। इनके माधयम से महादेवी ने इस पितृसत्तात्मक समाज में अन्याय और उत्पीड़न से घुटती छटपटाती नारियों की स्थिति को सामने रखा है और आज के नारी आन्दोलन की पूर्व पीठिका तैयार की है।

महादेवी के रेखाचित्रों में विमाता द्वारा अपने सौतेले बच्चों पर किए जाने वाले अत्याचारों की मार्मिक अभिव्यक्ति है। यह सत्य है कि सृष्टि में माँ का पद अद्वितीय होता है, विमाता उस पद की अधिकारिणी हो सकती है, परन्तु इसके उदाहरण विरले ही होते है। 'चीनी फेरीवाले' की माता की मृत्यु के पश्चात् जिस विमाता ने घर में प्रवेश किया उसने दोनों भाई-बहिनों के जीवन की दिशा ही बदल दी। वह इतनी पाशविक और अर्थलोलुप है कि अपनी सौतेली बेटी को वेश्या के गर्हित कार्य करवाने से भी हिचकती नहीं। भाई प्रतिदिन अपनी बहिन के साथ होने वाले दुष्कृत्य का साक्षी है, ''बहिन का संध्या होते ही कायापलट, फिर उसका आधी-रात बीत जाने पर भारी पैरों लौटना, विशाल शरीर वाली विमाता का जंगली बिल्ली की तरह हल्के पैरों से बिछौने से उछलकर उतर आना, बहिन के शिथिल हाथों से बटुए का छिन जाना और उसका भाई के मस्तक पर मुख रखकर स्तब्ध भाव से पड़ रहना आदि क्रम ज्यों-के-त्यों चलते रहे''[8] और इस क्रम में एक दिन ऐसा भी आता है, जब बहन वापस नहीं लौटती तथा हमेशा-हमेशा के लिए लुप्त हो जाती है। उसका छोटा भाई अपनी बहिन की तलाश में गिरहकटों तथा लुटेरों के चगुल में फँसकर गिरहकटी की शिक्षा ही नहीं पाता वरन् अनन्त, असहाय यातनाएँ भी सहता है, परन्तु ''यदि दीक्षान्त संस्कार के उपरान्त विद्या के उपयोग का श्री गणेश

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

महादेवी के रेखाचित्रों में समाज-चित्रण

- डॉ. गीता कपिल

एसो० प्रोफे०, हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान-304022

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

होते ही उसकी भेंट पिता के परिचित एक चीनी व्यापारी से न हो जाती तो उस साधना से प्राप्त विद्वता का क्या अन्त होता है यह बताना कठिन है।''[9]

इसी प्रकार लेखिका की बाल्य सखी बिन्दा की विमाता के आते ही उस पर मानों दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा। उसकी स्थिति घर में ऐसी नौकरानी सदृश हो गई, जो घर के सारे कार्य करने पर भी मालकिन की घुड़कियों, डाँट व मार से मुक्ति नहीं पाती। बिन्दा प्रतिक्षण विमाता के भय से ग्रस्त रहती। महादेवी उस भय ग्रस्त बालिका का चित्र इस प्रकार खींचती हैं, ''कहीं से कुछ आहट होते ही उसका विचित्र रूप, चौंक पड़ना और पण्डिताइन चाची का स्वर कान में पड़ते ही उसकेशरीर का थरथरा उठना, मेरे विस्मय को बढ़ा ही नहीं देता, प्रत्युत् उसे भय में बदल देता था और बिन्दा की आँखे तो मुझे पिजड़े में बन्द चिड़िया की याद दिलाती थी।''[10] विमाता के अत्याचारों से बिन्दा कोशरीर रहते मुक्ति नहीं मिल पाती इसलिए ममत्व की प्यासी वह नन्हीं सी बालिका रोग सेशरीर छोड़कर अपने समस्त दु:खों से मुक्ति के लिए अपनी मृत माँ के आंचल की शरण लेने चल देती है।

वस्तुत: जिन बच्चों को देश व समाज का कर्णधार समझते हैं, इन प्रतिकूल व असहय स्थितियों में वे किस सीमा तक हमारी आकांक्षाओं पर खरा उतरेंगे महादेवी के रेखाचित्र हमें यह सोचने के लिए विवश कर देते हैं।

भारत एक धर्मप्राण देश है। यहाँ की अधिकांश जनता धर्मभीरु है, फलस्वरूप यहाँ के समाज में अनेक धार्मिक संस्कार व्याप्त हैं, किन्तु दुर्भाग्यवश आज हमारे अनेक धार्मिक संस्कार रूढ़ियों और जड़ परम्पराओं में परिवर्तित हो गए हैं जो समाज की प्रगति में बाधक ही नहीं अनेक अत्याचारों व अन्यायों के पर्याय भी बन गए हैं। ये जड़ परम्पराएँ समाज के उच्च अथवा निम्न सभी वर्गों में व्याप्त हैं। महादेवी के रेखाचित्रों में उन धार्मिक विसंगतियों पर भी करारा व्यंग्य है। महादेवी के रेखाचित्रों में उन धार्मिक विसंगतियों पर भी करारा व्यंग्य है। कल्पवास जैसे धार्मिक सांस्कृतिक रिवाज के प्राचीन महत्त्व व उसके वर्तमान स्वरूप के संबंध में महादेवी कहती हैं, ''किसी समय इस कल्पवास का कितना महत्त्व रहा होगा, इसका अनुमान लगाने के लिए इसका आज का समारोह भी पर्याप्त है। सम्भवत: उस समय देश के विभिन्न खण्डों में रहने वाले व्यक्तियों के मिलन उनके पारम्परिक परिचय विचारों के आदान-प्रदान तथा सांस्कृतिक समन्वय का महत्त्वपूर्ण साधन रहा होगा।..... ..... आज इस संबंध में क्या और क्यों तो हम भूल चुके हैं, पर बिना जाने लीक पीटना धर्म बन गया है।''[11] इसी प्रकार कल्पवासियों का नियम हैं कि वे आग नहीं तापेंगे, परन्तु महादेवी वर्मा ने देखा कि यह नियम भी आज दिखावा मात्र रह गया है।

हिन्दू समाज में गौ पूजा, गो-दान तथा अन्नदान आदि का विशेष महत्त्व रहा है, परन्तु आज के अर्थ में अर्थ-प्रधान युग में स्वस्थ गाय को अर्थ प्राप्ति के लिए कसाई के हाथों बेच दिया जाता है और दुर्बल गाय दान दे दी जाती है ताकि गो-दान का यश भी मिल जाये और वृद्ध रोगी पशु से मुक्ति भी मिल जाये। हिन्दू धर्म के इस खोखलेपन पर बिबिया के माध्यम से इस प्रकार चोट करती हैं, वह ऐसी गाय-बधिया नहीं है, जिसे चाहे कसाई के हाथ बेच दिया जावे। चाहे वैतरणी पार उतारने के लिए महाब्राह्मण को दान कर दिया जाये।''[12] वस्तुत: दान पुण्य करने वाला वर्ग कभी नि:स्वार्थ भाव से दान-पुण्य नहीं करता वरन् वह अपने तुच्छ से तुच्छ दान के बदले पुण्य खरीदना चाहता है। प्रतिदिन गंगा स्नान करने वाले दानी भी महादेवी की पैनी दृष्टि से बच नहीं पाये है, ''जैसे तिथि पर्वों पर कथा वाचक के कथा कह चुकने पर श्रोता हाथ में रखे हुए अक्षत फूल फेंक देता है, वैसे ही वे धर्म खरीदने के लिए लाए हुए, सस्ते अन्न में से कभी एक मुट्ठी चावल, कभी चने, कभी जौ बूढ़े के सामने बिछे हुए अंगोछे पर बिखेरकर राह नापते।''[13] भारत की जनता का स्वर्ग सुख के नाम पर भी भोली-भाली जनता का अत्यधिक शोषण किया गया। इसी स्वर्ग सुख का लालच मन्नू की माई का ससुर उसे देता है ताकि वह उसका व उसके निकम्मे पुत्र का पेट भरने के लिए हाड़तोड़ परिश्रम करती रहे। वह चतुर वृद्ध अपनी बहू को समझाता है, ''दो दिन का कष्ट और उसके बदले में अनन्त काल के लिए स्वर्ग सुख। भला कौन भकुआ ऐसा होगा जो सौदे को सस्ता न समझे।''[14]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

महादेवी के रेखाचित्रों में समाज-चित्रण

- डॉ. गीता कपिल

एसो० प्रोफे०, हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान-304022

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

हमारे समाज में आज भी ऐसे ढोंगी साधू-महात्माओं की कमी नहीं है, जो धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता को भ्रमित करते हैं और उनका शोषण करके विलासी जीवन व्यतीत करते हैं। ग्रामीण समाज अशिक्षित होने के कारण ऐसे साधुओं के आगमन को विशेष महत्त्व देता है। इनके सम्बन्ध में महादेवी कहती हैं, तम्बाकू के पिण्ड जैसे काले शरीर में राख का अंगराग लगाकर, नकली जटाजूट का मुकुट धारण कर और चिमटे का राजदण्ड थामकर वे एक कुशासन पर आसीन होकर, इन याचकों के दरबार का संचालन करते।''[15] ये ढोंगी साधू शरीर से ही नहीं मन से भी अत्यन्त कलुषित होते हैं। ये अपने भगवा चोले की आड़ में व्यभिचार जैसे अनेक असामाजिक कृत्यों को भी आसानी छुपा कर समाज में श्रद्धा प्राप्त कर लेते हैं। इन भ्रष्ट साधुओं की ''स्त्री याचकों के प्रति कृपा अस्वाभाविक रहती थी। कोई ग्रामवधू जब अपने पति की अवज्ञा या अपनी सन्तानहीनता की दु:ख गाथा सुनाती, तब उनकी गांजे के नशे से अरुण आँखें और अधिक अरुण हो जाती हैं।''[16] वस्तुत: इन साधुओं पर श्रद्धा रखने वाला समाज अधिकाशत: अशिक्षित व अज्ञानी होता है, जो तर्क व यथार्थ से परे कोरी भावुकता व कल्पना में जीता है। महादेवी ने इन ढोंगी महात्माओं के विचित्र सेवकों व याचकों का बड़ा यथार्थ चित्र खींचा है,''किसी को बढ़ौती में पुत्र चाहिए। किसी को और अधिक धान की आवश्यकता थी। कोई अपने पट्टीदार को हराना चाहता। कोई अपने सगे भाई को विरक्त करने के लिए उच्चाटन मंत्र माँगता था।..... कोई गिरवी गहने को हथियाने के लिए फर्जदार में चित्त-भ्रम उत्पन्न करने का इच्छुक था। कोई बिना औषधी के ही रोग-मुक्त होने की याचना करता।''[17]

हमारे समाज की विडम्बना है कि इसके एक वर्ग के पास तो अकूत धन-सम्पदा है और दूसरे वर्ग को एक वक्त की रोटी भी मय्यसर नहीं हो पाती। परिवार के भरण पोषण के लिए यह वर्ग हाड़तोड़ परिश्रम करता है, फिर भी परिवार को भोजन-वस्त्रादि आवश्यक वस्तुएँ भी मुहैया नहीं करवा पाता। वस्तुत: महादेवी के रेखाचित्रों का मुख्य वर्ण्य विषय यही दीन-हीन निम्नवर्ग है तथा उनकी सहानुभूति भी सदैव इसी वर्ग के साथ रहीं है। पहाड़ी कुलियों के माध्यम से वे उस वर्ग की निर्धनता का मार्मिक चित्र इस प्रकार खींचती हैं, ''पर्वतीय पथ और पत्थरों की चोट से टूट हुए नाखून और चुटीली उंगलियों के बीच में ढाल बनी हुई मूंज की चप्पल मानो मनुष्य को पशु बनाकर भी खुर न देने वाले परमात्मा का उपहास कर रही थी। पाँव से दो बालिश्त ऊँचा और ऊनी-सूती पैबन्दों से बना हुआ पैजामा मनुष्य की लज्जाशील की विडम्बना जैसा लगता था। कभी से कभी मिले हुए पुराने कोट में नीचे के मटमैले अस्तर की झाँकी देती हुई ऊपरी तह तार-तार फटकर झालदार हो उठी थी और अब अपने पहनने वाले को एक जन्तु की भूमिका उपस्थित करती थी।''[18]

वास्तव में निर्धन परिवारों में व्यक्ति अपने जीवन से अधिक मूल्यवान और दुर्लभ उन वस्तुओं को मानन लगता है, जो उसके जीवन-निर्वाह के लिए साधन रूप में उसके पास होती है। इन परिवारों के बच्चे भी असमय ही बड़े हो जाते हैं। बालक मन्नू भी जानता है कि उसका पिता निकम्मा है, दादा भीख मांगता है और माँ किसी तरह सबके भोजन की व्यवस्था करती है, इसलिए ''माँ कभी पुराने और कभी सस्ते मोटे कपड़े का लम्बा और बैड़ोल कुरता उलटी-सीधी खोंपे भरकर सी और उसे मैला न करने के संबंध में इतना उपदेश देती रहती है कि बालक कुरते को शरीर से अधिक मूल्यवान समझने लगता है। चाहे आँधी-पानी हो, चाहे लू-धूप हो, वह सदा कुरते को उतारकर सुरक्षित स्थान में रखने के उपरान्त की साथयों के साथ खेलता है।''[19]

यों तो महादेवी के रेखाचित्रों के अधिकांश चरित्र गरीबी और भूख से जूझते दिखाई देते हैं, किन्तु लछमा नामक पहाड़ी युवती की हृदय कंपित करने वाली दर्द गाथा वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की हृदयहीनता का चित्र तो है, साथ ही यह सोचने को भी विवश करती है कि वह व्यवस्था गरीबों को पशुओं से भी निकृष्ट समझती है। लछमा महादेवी को बताती है कि, ''जब बहुत भूखा हुआ, तब पीली मिट्टी का एक गोला बनाकर मुँह में रखा और आँख मुंद कर सोचा लड्डू खाया। बस फिर बहुत-सा पानी पी लिया और सब ठीक हो गया।''[20] वस्तुत: आज हमारा देश निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। हमारी अर्थव्यवस्था की विकास दर भी निरन्तर बढ़ रही है और हम विकसित देशों की पंक्ति में अपना नाम दर्ज करवाने की होड़ में हैं, परन्तु हमारे देश के निम्न तबके की स्थिति आज भी बहुत अधिक नहीं बदली है, देश की आर्थिक प्रगति का लाभ मुट्ठीभर लोगों को ही मिला है। महादेवी के रेखाचित्रों में यह निम्नवर्ग उनकी असीम सहानुभूति का भागीदार है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

महादेवी के रेखाचित्रों में समाज-चित्रण

- डॉ. गीता कपिल

एसो० प्रोफे०, हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान-304022

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

महादेवी के इन रेखाचित्रों में स्थान-स्थान पर उच्चवर्ग की अमानवीयता तथा हृदयहीनता का भी परिचय मिलता है। अपने लाभ तथा स्वार्थ के लिए यह वर्ग सारी नैतिकता और मानवीयता की बलि चढ़ा देता है। निर्धन वर्ग इस वर्ग के लिए पशुतुल्य होता है। 'जंगबहादुर' नामक रेखाचित्र में महादेवी ने इस धनाढ्य वर्ग की हृदयहीनता व स्वार्थहीनता का बड़ा यथार्थ चित्र अंकित किया है, ''यात्री भी एक रुपया प्रतदिन देकर कुली को खरीदता है, इसलिए लाभ की दृष्टि से तीन-दिन का रास्ता एक दिन में तय करने की इच्छा स्वाभाविक है, अन्यथा वह घाटे में रहेगा। यात्री तो बैठा-बैठा ऊँघता रहता है, पकवान, सूखे मेवे आदि उसके साथ होते हैं, अत: अधिक थकावट या अधिक भूख का प्रश्न ही नहीं उठता, पर वह कुलियों के विराम और भोजन के समय में से घटता रहता है। सवेरे ही कह देता है कि बीस मील का रास्ता तय करना होगा चाहे जिस तरह चलो, पर शाम तक इतना न चलने पर मजदूरी काट ली जाएगी और बेचारे मनुष्य पशु हाँफ-हाँफकर मुँह से फिचकुर हुए दौड़ते हैं।''[21]

महादेवी द्वारा चित्रित यह उच्चवर्ग जहाँ हृदयहीन, स्वार्थी, अमानवीय, ईर्ष्या, द्वेष, झूठ, बेईमानी आदि विकारों से ग्रस्त है, वहीं निम्नवर्ग अनेकानेक मानवीय गुणों- मानवीयता, अपनत्व बोध, दया, करुणा, उत्तरदायित्व बोध, कर्मठता से युक्त दिखाई देता है। महादेवी शिष्ट, सभ्य तथा निर्धन समाज के प्रवृत्तिगत वैषम्य को इस प्रकार रेखांकित करती हैं, ''एक संभ्रान्त परिवार की वृद्ध माता ने बताया था कि उसका लड़का जब तब उस पर हाथ चला बैठता है और मातृत्व की दोहाई देने पर उत्तर मिलता है ..... वह जमाना गया जब तुम सब से पैर पुजाती थी, पैदा किया तो अपने शौक के लिए किया ..... इसी कारण हम तुम पर चन्दन-चावल चढ़ाते-चढ़ाते जन्म बिता दें। जब जन्मदात्री के संबंध में मनुष्य इनता शिष्ट हो उठा है तब सहोदरता विषयक शिष्टता की चर्चा करना व्यर्थ होगा, पर जंगबहादुर का अनुज इतना प्रगतिशील नहीं हो पाया, अत: बड़े भाई से पैर दबवाना उसे शिष्टाचार के विरूद्ध जान पड़े तो आश्चर्य नहीं।''[22]

यद्यपि यह वर्ग जीवन की बुनियादी जरूरतों से वंचित है, परन्तु मानवीयता रहित नहीं, अपने लाभ व स्वार्थ से ऊपर उठकर वह यह सदैव इंसानियत और परोपकार को महत्त्व देता है। महादेवी बद्रीनाथ ले जाने वाले उन कुलियों की स्वामीभक्ति और सेवा भावना से प्रभावित हुए बिना नहीं रहती। ये ''पहाड़ी कुली अपने देश परिवार और नवजात शिशुओं को त्याग 'दो पैसे' कमाने आते हैं और इस कमाई का मूल्य अक्सर अपने प्राणों के बलिदान से भी चुकाना पड़ता है, वे इस कमाई के दौरान भी स्वार्थ से ऊपर उठकर श्रेष्ठ मानव बने रह सकते हैं, यह आश्चर्यजनक नहीं, यह सोचने को विवश भी करता है कि मानवीय व्यक्तित्व को सीधे-सीधे अर्थ-सम्बन्धों से जोड़कर उसकी व्याख्या करने वाले कितने अज्ञानी और भोले हैं।''[23]

इसी प्रकार पहाड़ी युवती लक्षमा ससुराल से तिरस्कृत होने पर अपने माँ-बाप का नहीं, अपने भाई के नवजात शिशु का उत्तरदायित्व वहन करती है, गुंगियाँ गुंगी होते हुए भी अपनी सौत के मर जाने पर उसके बालक का अपने पुत्र समान लालन-पालन करती है, मन्नू की माई कठोर परिश्रम करके अपने निकम्मे पति और बूढ़े ससुर के भोजन की व्यवस्था करती है तो साबिया अपने व्यभिचारी पति की अंधी माँ की सेवा करती है। महादेवी ने सभ्य-शिष्ट तथा दीन-वंचितों के समाज में व्याप्त भावों के अन्तर को भली-भांति महसूस किया है, तभी तो वे लिखती हैं, ठकुरी बाबा जैसे लोगों का ''बाह्य जीवन दीन है और हमारा अन्तर्जीवन रिक्त।''[24]

अपने इन रेखाचित्रों में महादेवी ने शिष्ट व नागरिक समाज में होने वाले कवि सम्मेलनों के माध्यम से कुलीन संस्कृति और लोक संस्कृति के फर्क को बड़े तीखेपन के साथ उभारा है। कल्पवास के समय ठकुरीबाबा की मण्डली के साथ महादेवी ने ग्रामीण समाज के साथ बैठकर भक्ति भजनों तथा कबीर, सूर व तुलसी के पदों का भरपूर आनन्द लिया। यद्यपि उस मण्डली में न कोई सधा गायक था, न उनके स्वर में लोच था न कण्ठों का माधुर्य, फिर भी तन्मय कर देने का अद्भुत भाव था। व्यक्तिगत राग-द्वेषों से ऊपर उठाने वाले ये गीत अपने भावों में अनूठे थे, जिन्होंने महादेवी को भी भाव-विभोर कर दिया।

इसके विपरीत कवि सम्मेलनों में तन्मय करने की नहीं चमत्कृत करने की शक्ति होती है। यहाँ कवियों का उद्देश्य चमत्कार प्रदर्शन करके अधिकाधिक धन एकत्रित करना होता है। कभी-कभी तो ये कवि सम्मेलन आठ-आठ घण्टे तक चलते हैं, फिर भी कवि के भाव श्रोताओं के मन के साथ जुड़ नहीं पाते और कवि तथा

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

महादेवी के रेखाचित्रों में समाज-चित्रण

- डॉ. गीता कपिल

एसो० प्रोफे०, हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान-304022

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

श्रोता दोनों की स्थिति बाजीगर और तमाशबीन सदृश हो जाती है। अन्ततः श्रोता निराश होकर घर लौटता है। वास्तव में कवि सस्ती लोकप्रियता और आर्थिक लाभ के लिए गला फाड़-फाड़कर काव्यपाठ तो करते हैं, परन्तु उन्हें न तो कविता के भावों की चिन्ता होती है न ही श्रोताओं के आनन्द की। महादेवी के मत में, ''हमारे सभ्यता दर्पित शिष्ट समाज का काव्यनन्द छिछला उसका लक्ष्य सस्ता मनोरंजन मात्र रहता है।''[25] इसके विपरीत चारणों की वंश परम्परा में पैदा होने वाले आशु कवि व गायक ठकुरी बाबा है, जो पूँजीवादी युग में अर्थ की चिन्ता से रहित स्वान्तः सुखाय के लिए कहीं किसी के बुलाने पर विरहा या आल्हा-ऊदल सुनाते चल देते। इसलिए अर्थ की दृष्टि से ठकुरी बाबा सुदामा ही रहे।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि महादेवी के रेखाचित्र उनके गहरे सामाजिक सरोकारों के परिचायक हैं और गीति काव्य की प्रणयिनी कवयित्री की सामाजिक संवेदना और सहानुभूति को व्यक्त करते हैं। इनमें तद्युगीन समाज ही नहीं वर्तमान समाज का भी प्रतिबिम्बत साफ देखा जा सकता है। वस्तुतः इनमें जिन-जिन सामाजिक समस्याओं व विसंगतियों को उजागर करने का प्रयास किया है वे आज भी कमोवेश जस-की-तस हैं। आज जबकि दलितों, पीड़ितों, शोषितों के प्रति हमारी सहानुभूति व पक्षधरता लगभग समाप्त सी हो गई, ऐसे समय में महादेवी के रेखाचित्र हमारे अन्दर इस वर्ग के प्रति सहानुभूति ही नहीं पैदा करते वरन् समस्त सामाजिक व्यवस्था को बदलने की बैचेनी भी पैदा करते हैं। वस्तुतः इन रेखाचित्रों में लेखिका ने उन सवालों को बड़ी हमदर्दी के साथ उकेरा है, जिन्होंने समाज के एक वर्ग को तो सर्व सम्पन्न बना रखा और दूसरे वर्ग को अभावों, पीड़ाओं और कष्टों से व्याकुल।

संदर्भः-

1 महादेवी : चिन्तन व कला, सं. इन्द्रनाथ मदान, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1965, पृष्ठ 151
2 महादेवी का गद्य, सूर्य प्रसाद दीक्षित, नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 10
3 स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992 पृष्ठ 8
4 अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 28
5 वही, पृष्ठ 31
6 स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 8-9
7 अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 75
8 स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 24
9 वही, पृष्ठ 25
10 अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 35-36
11 स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 24
12 वही, पृष्ठ 90
13 वही, पृष्ठ 40
14 वही, पृष्ठ 47
15 वही, पृष्ठ 118
16 वही, पृष्ठ 118
17 वही, पृष्ठ 118
18 वही, पृष्ठ 29
19 वही, पृष्ठ 43
20 अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 101
21 स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 33
22 वही, पृष्ठ 35
23 महादेवी के रेखाचित्र, मक्खनलाल शर्मा, प्रेमशील प्रकाशन, आजादपुर, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 75
24 स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 80-81
25 वही, पृष्ठ 80-81-81

SHODH SANCHAYAN